बी.एच.डी.ई–143

बी.ए. (हिंदी) ऑनर्स कार्यक्रम
(BAHDH)

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2023 और जुलाई 2023 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.-143
प्रेमचंद

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

प्रेमचंद

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.–143 / 2023

आपको प्रेमचंद पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.ई.–143 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 तथा 2 पर आधारित है।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको प्रेमचंद तथा उनके साहित्य से अवगत कराना है। प्रेमचंद ने कथा साहित्य के साथ–साथ निबंध, नाटक आदि की भी रचना की है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप प्रेमचंद के कथा साहित्य, नाटक एवं निबंध से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको प्रेमचंद के साहित्य के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है।

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....

दिनांक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य प्रेमचंद और उनके साहित्य के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न पाठ्यक्रम में अध्ययन कराए जा रहे प्रेमचंद के साहित्य के अंश दिए गए हैं, जिनकी संदर्भ सहित व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी प्रेमचंद के साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबंध के अंशों की व्याख्या–विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास **अवश्य जमा करा दें।**

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :

- दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
- जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए– 30 अप्रैल

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। विषय संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

प्रेमचंद
(BHDE- 143)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई–143
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ई–143/टीएमए/2023
कुल अंक 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाग–क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10×4 = 40

(क). संध्या समय सदन की नाव गंगा की लहरों पर इस भाँति चल रही थी, जैसे आकाश में मेघ चलते है। लेकिन उसके चेहरे पर आनन्द–विलास की जगह भविष्य की शंका झलक रही थी, जैसे कोई विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद चिंता में ग्रस्त हो जाता है। उसे अनुभव होता है कि वह बाँध, जो संसार रूपी नदी की बाए से मुझे बचाए हुए था, टूट गया है और मैं अथाह सागर में खड़ा हूँ। सदन सोच रहा था कि मैंने नाव तो नदी में डाल दी, लेकिन यह पार भी लगेगी? उसे अब मालूम हो रहा था कि वह पानी गहरा है, हवा तेज है और जीवन–यात्रा इतनी सरल नहीं है, जितनी मैं समझता था। लहर यदि मीठे स्वरों में गाती है, तो भयंकर ध्वनि से गरजती है। हवा अगर लहरों को थपकियाँ देती हैं, तो कभी–कभी उन्हें उछाल भी देती है।

(ख). हमने जिस युग को अभी पार किया है, उसे जीवन से कोई मतलब न था। हमारे साहित्यकार कल्पना की एक सृष्टि खड़ी करके उसमें मनमाने तिलस्म बाँधा करते थे। कहीं फिसानये अजायब की दास्तान थी, कहीं दास्ताने खयाल की और कहीं चन्द्रकान्ता–सन्तति की। इन आख्यानों का उद्देश्य केवल मनोरंजन था और हमारे अद्भुत रस–प्रेम की तृप्ति, साहित्य का जीवन से कोई लगाव है, यह कल्पनातीत था। कहानी कहानी है, जीवन जीवन।

(ग). जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने उसे आज इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे। सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के झोंकों को तुच्छ समझती थी।

(घ). मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्यायपरायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायितव का ज्ञान है। नवयुवक युवावस्था में कितना उदण्ड रहता है। माता–पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं! वे उसे कुल–कलंक समझते हैं, परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित–चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।

भाग–ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 750–800 शब्दों में दीजिए। 15×3 = 45

(1). प्रेमचंद के उपन्यासों का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
(2). 'सेवासदन' की भाषा और संवाद योजना की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(3). 'ईदगाह' कहानी के संरचना–शिल्प का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

भाग–ग

3. निम्नलिखित विषयों पर (प्रत्येक) लगभग 350 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5×3 = 15

(1) हल्कू का चरित्र
(2) 'पंच परमेश्वर' की भाषागत विशेषताएँ
(3) 'साहित्य का उद्देश्य' का भाव पक्ष